3-3

चमत्कार चिन्तामणी

Thana–Warehouse :

.... BOMBAY/C

Please ship the following packages and obtain Bill of Lading/Airway Bill o
and conditions of business and at our risk and responsibility.

We will take delivery of documents against payment of steamer freight as w
for handling shipment. In case shipment is made on freight Collect Basis,
you the freight and all other charges occuring at destination if not paid by t
confirm that the contents of the packages have been truly and correctly d
authorise you to declare contents in the Shipping Bill to be filled by cn o
Customs as per our invoice at our responsibility.

Goods despatched to Bombay/Thane-Truck receipt/Railway receipt No..........
dt..............................Freight duly PREPAID/TO-PAY.

(N.B.) Goods to be consigned till Thane only. (GR to mention please contac

1. No. & Type of Packages..
2. Description of contents..
3. FOB/C&F/CIF value......................Port of Discharge......................Steamer
4. RBI Code No..........................GRI Form No..........................DT..........
5. Gross Wt...Nett Weight....................
6. Drawback Serial No...Rate of Drawback..........
7. INSTRUCTIONS FOR PREPA

॥ श्रीः ॥

Mohana

चमत्कारचिंतामणि ।

(जातकग्रन्थ)

भट्टनारायणविरचित ।

गया जिलांतर्गत देव राजधानी समीपवर्ती कुरकाग्राम निवासी

पं. धनुषधारी मिश्र कृत भाषाटीका समेत ।

जिसको

बाबू बैजनाथप्रसाद बुकसेलर,

बनारस सिटी ने

बम्बई

अक्षरों में छपवाकर प्रकाशित किया ।

संवत् १९७२.

PRINTED BY P. ATMARAM SHARMA,
at the George Printing Works, Kalbhairo Benares



॥ श्रीः ॥

चमत्कारचिंतामणि ।

(जातकग्रन्थ)

भट्टनारायणविरचित ।

गया जिलांतर्गत देव राजधानी समीपवर्ती कुरकाग्राम निवासी

पं. धनुष धारी मिश्र कृत भाषाटीका समेत ।

जिसको

बाबू बैजनाथप्रसाद बुकसेलर,

बनारस सिटी ने

बम्बई

अक्षरों में छपवाकर प्रकाशित किया ।

संवत् १९७२.

PRINTED BY P. ATMARAM SHARMA,
at the George Printing Works, Kalbhairo Benares

नीचास्थे तो जन्मानि येषां तेषां स्यात्
दशमे नाथस्य तद्राज्यं नाथ नवेषे को
णेषु दे केन्द्र वा तौ राजा नवधा मौक
चकु वर्ति नाथा नवमे पंचमे राहुं नवमे
पंचमे कुज नवमे पंचमे शनि री पुत्र सन्तप
तेन द्रष्टे

भूमिका।

संसार में ऐसा कौन पुरुष होगा जिसे अपने सुख दुःख हानि लाभ आदि इष्टानिष्ट फलों को जानने की अभिलाषा न हो इस पुस्तक से ज्योतिष विद्या के न जानने वाले भी सुगमता से अपने सब फलों को भलीभांति जान सकते हैं पर संस्कृत भाषा में होने के कारण प्रायः अनेक जन जो संस्कृत नहीं जानते हैं, इस अनुपम फल प्राप्ति से बंचित रह जाते हैं अतएव इसे सर्व साधारण का हितकारी जान इस अभाव को दूर करने के निमित्त श्रीमान बाबू बैजनाथ प्रसाद जी बुकसेलर बनारस सिटी ने मुझ से यह अभिलाषा प्रकट की कि इस अनुपम पुस्तक का भाषानुवाद हो जाय तो सर्व साधारण को बड़ा उपकार हो अतएव मैं भी सर्वसाधारण को इसके द्वारा लाभ प्राप्त करने का सुगम उपाय समझ अपनी अल्प बुद्धि द्वारा भाषा टीका से इसे समलंकृत कर आशावान हूं कि सर्व साधारण जन सादर ग्रहण कर इस से कुछ भी लाभ प्राप्त करें तो मैं अपने परिश्रम को सफल जानूं।

मेरी अल्पज्ञता वा छापेखाने आदि की असावधानता के कारण कहीं कुछ भूल चूक रह गई हो तो सज्जन जन उसे सुधार कर पढ़ेंगे और कृपया मुझे भी सूचित करेंगे तो मैं पुनरावृत्ति में सुधार दूंगा क्योंकि :—

मैं न चतुर गुण गण रहित, रहित अर्थ मर्याद ।
पै श्रम अनुचर को समुझि; दीजे आशीर्वाद ॥१॥

श्री क्षेत्र काशी
माघ कृष्ण ५ सं० १९७२.

आपलोगों का सेवक
धनुष धारी मिश्र,
ग्राम कुरका, डा० देव, (गया)।



Mohandas

श्रीगणेशायनमः ।

चमत्कारचिन्तामणिः ।

भाषाटीकासहितः ।

स्मृतिरेवयस्यप्रज्ञांद्राक्ददाति तमेवहृदिधृत्वाऽहम् ।
भाषायांवृत्तिरियं चमत्कारचिन्तामणेर्विदधामि॥१॥

अथ रविभावफलानि ।

तनुस्थोरविस्तुंगयष्टिंविधत्ते मनः संतपेद्दारदा-यादवर्गात् ॥ वपुःपीडयतेवातपित्तेननित्यं सवैपर्यटन्हास वृद्धिंप्रयाति ॥ १ ॥

भा०टी० जिस मनुष्यके जन्म स्थान में सूर्य्य हों तो उसके शरीर तथा नासिका आदि अवयव ऊंचे हों, स्त्री पुत्रादि से दुखित रहे, वायु युक्त पित्तरोगसे पीड़ित रहे, देशदेशान्तरोंमें भ्रमण करता रहे, धन कभी घटता कभी वढ़ता रहे, मनुष्य इर्षावान और क्रोधी स्वभाव का होय ॥ १ ॥

धनेयस्यभानुःसभाग्याधिकः स्याच्चतुष्पात्सुखं सव्ययेस्वंचयाति ॥ कुटुंबेकलिर्जाययाजायतेपि क्रियानिष्फलायातिलाभस्यहेतोः ॥ २ ॥

भा०टी०–जिस मनुष्य के जन्म लग्न से दूसरे स्थान में सूर्य्य हों वह भाग्यशाली हो, हाथी घोड़े गौ बैल आदि का सुख पावे,दानादि धर्म कार्य्यों में धन खर्च करे, स्त्रीवश होने के कारण कुटुम्बों में कलह होवे, लाभ के लिये बहुत यत्न करने परभी निष्फल हो, व्यर्थ हानि ही होवे, यह धनहीन, कृतघ्न, श्रद्धारहित, कुसंगी और ठग होवे ।

तृतीयेयदाहर्मणिर्जन्मकाले प्रतापाधिकंविक्रमं चातनोति ॥ तदासोदरैस्तप्यतेतीर्थचारी सदारिक्षयःसंगरेशंनरेशात् ॥ ३ ॥

भा०टी०–जिस मनुष्य के जन्म लग्न से तीसरे स्थान में सूर्य्य हों वह पुरुषार्थी प्रतापी, वीर, तथा सहोदर भाइयों से दुखी होवे, तीर्थाटन करने वाला हो, शत्रुओं को नाश करे, राजासे सुख पावे, निरोगी, परोपकारी, विवेकी और विद्वान तथा विख्यात होवे ॥ ३ ॥

तुरीयेदिनेशेतिशोभाधिकारी जनःसंलभेद्वि ग्रहंबंधुतोपि ॥ प्रवासीविपक्षाहवेमानभंगं कदाचि न्नशांतंभवेत्तस्यचेतः ॥ ४ ॥

भा०टी०जिस मनुष्य के जन्म लग्न से चौथे स्थान में सूर्य्य हों वह सुन्दर और अधिकारी तथा स्वाधीन होवे, सर्व साधारण जनो में मान पावे, कुटुम्ब और अन्यान्य लोगों में कलह होता रहे, विपक्ष के लोगों में मानहानि (बेइज्जती) हो, विदेश में अधिक रहे, चित्त से सर्वदा चंचल रहे। सारांश यह कि मनुष्य झगड़ालू, दूसरे की हानि ताकने वाला, धनरहित, उद्धतस्वभाव और झूठ बोलने वाला होवे ॥४॥

सुतस्थानगेपूर्वजापत्यतापीकुशाग्रामतिर्भास्क रेमंत्रविद्या ॥ रतिर्वंचनेसंन्चकोपिप्रमादीस्फातिः क्रोडरोगादिजाभावनीया ॥५॥

भा० टी० जिस मनुष्य के जन्म लग्न से पांचवें स्थान में सूर्य्य हों वह अपने प्रथम पुत्र के शोक से क्लेशित हो, मंत्र विद्या का जानने वाला हो, धन संचय करे, बुद्धि का तीक्ष्ण (तेज़) हो, सूक्ष्म विचार करने वाला और ठग होवे, क्रोड़

(कुक्षि) रोगादि से मृत्यु पावे । यह मनुष्य थोड़े ही सन्तान वाला नम्रता रहित (ऊसठ) दुष्टाचारी, व्यसनी और बहुत शत्रुवाला होवे ॥५॥

रिपुध्वंसकृद्भास्करोयस्यषष्ठे तनोतिव्ययंराजतो मित्रतोवा ॥ कुलेमातुशपश्चतुष्पादतोवा प्रयाणे निषादैर्विषादंकरोति ॥६॥

भा० टी०–जिस मनुष्य के जन्म लग्न से छठें स्थान में सूर्य्य हों तो वह मनुष्य रिपुध्वंसी (शत्रु का जीतने वाला) होता है, राज्यदण्ड तथा मित्रकार्य्यों में धन को खर्च करे, मामा के कुल की हानि हो, घोड़े आदि चौपायों से ख़तरा पावे और यात्रा में चोरों से लूटा जावे । सारांश यह कि इस लग्न में जन्म लेने वाला मनुष्य शत्रुरहित, सुन्दर, नम्रतायुक्त, अच्छे लोगों की संगति करने वाला तथा भाई बन्धुओं का प्रिय होता है ॥६॥

द्युनाथोयदाद्यूनयातोनरस्य प्रियातापनंपिंडपीडा चचिंता ॥ भवेत्तुच्छलब्धिःक्रयेक्रवियेपिप्रतिस्पर्द्धयानैतिनिद्रांकदाचित् ॥७॥

भा०टी०-जिस मनुष्य के जन्म लग्न से सातवें स्थान में सूर्य्य हों उसकी भार्य्या (स्त्री) सर्वदा रोगी रहे चिन्तायुक्त हो, व्यापारमें कम लाभ होवे, हमेशा वाद विवाद (लड़ाई झगड़ा) होती रहे । सारांश यह कि मनुष्य दुष्ट स्त्री वाला, किसीसे मित्रता न रखने वाला, रोगी और कामातुर होवे ॥७॥

क्रियाल्लंपटत्वष्टमेकष्टभाजं विदेशीयदारान् भजेद्धाप्यवस्तु ॥ वसुक्षीणतादस्युतोवाविलंबाद्वि पद्गुह्यताभानुरुग्रंविधत्ते ॥८॥

भा० टी०-जिस मनुष्य के जन्मग्न से आठवें स्थान में सूर्य्य हों वह सव व्यवहारों मे चतुर एवं धूर्त हो, धूर्तता से कष्ट पावे, वेश्याओं से संगति करें, आलस से तथा चोरों से धन नष्ट हो, यह मनुष्य गर्मी सुजाक आदि रोगों से ग्रसित रहे । यह मनुष्य विदेश का रहने वाला, हीन कर्म करने वाला, रोगयुक्त और प्रेम रहित होवे ॥८॥

दिवानायकेदुष्टताकोणयाते नचाप्नोतिचिंता विरामंचचेतः ॥ तपश्चर्य्यया ऽनिच्छयापिप्रयाति क्रियातुंगतातप्यतेसोदरेण ॥९॥

भा० टी०-जिस मनुष्य के जन्म लग्नसे नवें स्थान में सूर्य्य हों वह जप तप नियमादि का करने वाला होवे और इसी के प्रताप से आदर भी पावे भाइयों से सन्तापित रहे, दुष्टता के कारण चित्तमें शान्ति न हो। सारांश यह है कि इस लग्न में जन्म लेने वाला विख्यात, कीर्तिमान राजाओं का प्रिय, अन्यान्य मनुष्यों के धन से धनवान, धर्मरहित और बुद्धिहीन होवे ॥९॥

प्रयातेंशुमान्यस्यमेषूरणोऽस्य श्रमःसिद्धिदो राजतुल्योनरश्च॥ जनन्यास्तथायातनामातनोति क्लमःसंक्रमेद्धल्लभौर्विप्रयोगः ॥ १० ॥

भा०टी०-जिस मनुष्य के जन्म लग्न से दसवें स्थान में सूर्य्य हों उसकी माता रोगीहोवे, वह पुरुष पराक्रमी होवे और राजाओं के तुल्य उद्यम में सफलता प्राप्त करे, स्त्री पुत्रादिकोंसे विरोध के कारण दुखी तथा धनी, भाग्यशाली, बहुतसे प्रेमी मित्रों-वाला, विनयी, देवता और गुरुका भक्त होवे ॥१०॥

रवौसंलभेत्स्वंचलाभोपयाते नृपद्धारतोराजमुद्रा धिकारात्॥ प्रतापानलेशत्रवःसंपतंति श्रियोनेक दादुःखभंगोद्भवानाम् ॥११॥

भा० टी०- जिस मनुष्य के जन्म लग्न से इगारहवें स्थान में सूर्य्य हों तो वह राजद्वार से धन तथा हाथी घोड़े आदि अनेक सम्पत्ति पावे, इसके प्रताप रूपी अग्नि में शत्रु नाश होते रहें सन्तान से दुःखी रहे अर्थात् सन्तान न होवें सारांश यह है कि यह पुरुष भाग्यशाली, प्रियवादी, विचारवाला और रति क्रीड़ा में चतुर होवे ॥११॥

रविर्द्वादशेनेत्ररोगंकरोति विपक्षाहवेजायतेसौ जयश्रीः ॥ स्थितिर्लब्धयालीयतेदेहदुःखं पितृव्यापदोहानिरध्वप्रदेशे ॥१२॥

भा० टी०–जिस मनुष्य के जन्म लग्नसे बारहवें स्थान में सूर्य्य हों उसे नेत्र रोग (आंख की बीमारी) होवे, शत्रु जीतने की अभिलाषा कर संग्राम में विजय प्राप्त करे, शरीर से अत्यन्त दुखी रहे, पिता, चाचा आदि लोगों से क्लेश हो, दुर्जनों की संगति से धन नष्ट हो, शत्रुसे दुखी रहे, दुष्ट कर्म करे और स्वयं भी दुष्ट होवे ॥१२॥

इति रविभावफलानि ।

अथ चंद्रभावफलानि ।

विधुर्गोकुलीराजगःसन्वपुःस्थो धनाध्यक्ष लावरायमानंदपूर्णाम् ॥ विधत्तेधनंक्षीणदेहंदरिद्रं जडंश्रोत्रहीनंनरंशेषलग्ने ॥ १ ॥

भा० टी०--जिस मनुष्य के जन्म लग्न में अथवा मेष वृष वा कर्क राशि में चन्द्रमा हों तो वह पुरुष अति धनवान होवे, चित्त आनन्द में निमग्न रहे, और राशियों का हो तो अधर्मी हो नीच काम करे, कमजोर, दुबलापतला रहे, धनहीन और बहिरा होवे। सारांश यह है कि यदि पूरे चन्द्रमा पड़े हों तो भाग्यवन्त और सुंदर होवे और यदि क्षीण चंद्रमा पड़े हों तो कुरूप, पापी, मित्र राहित और मिथ्यावादी होवे ॥१॥

हिमांशौवसुस्थानगेधान्यलाभः शरीरेति सौख्यंविलासोंगनानाम् ॥ कुटुंबेरतिर्जायतेतस्य-तुच्छं वशंदर्शनेयातिदेवांगनापि ॥ २ ॥

भा० टी०--जिस मनुष्य के जन्म लग्न से दूसरे भाव में चन्द्रमा हों तो वह पुरुष सुखी शरीर वाला होवे, स्त्री सुख रहे, कुटुम्बों में अल्प (थोड़ा) प्रेम हो, रूपवान हो,

और इसकी सुन्दरता मनमोहनी होवे । सारांश यह है कि धन सम्पत्ति वाला, प्रियवादी (मिठी बात बोलने वाला) देवता तथा ब्राह्मणो का भक्त, बड़ा प्रतापी और मिलनसार होवे ॥२॥

विधौविक्रमेविक्रमेणातिवित्तं तपस्वीभवेद्वाभि-नीरंजितोपि ॥ कियाच्चिन्तयेत्साहजंतस्यशर्मप्रता-पोज्वलोधर्मिणोवैजयंत्या ॥३॥

भा० टी०—जिस मनुष्य के जन्म लग्न से तीसरे स्थानमें चन्द्रमा हों वह बहुत परिश्रम से धन प्राप्त करे, धर्मात्मा, तपस्वी और लोभ रहित होवे, यशस्वी हो, अच्छे प्रतापवाला मनुष्य होवे, और भाइयों का सुख भी खूब देखे । सारांश यह है कि इस लगन में जन्म लेने वाला पुरुष रूपवान, भागयशाली सुंदर स्त्रियों का प्यारा तथा कला कौशल का जानने वाला और संतान में प्रेम रखने वाला होताहै । इसे बेटे नाती आदि बहुत परिवार होवें ॥३॥

यदाबंधुगोबांधवैरात्रिजन्मा नृपद्वारसर्वाधि कारीसदैव ॥ वयस्यादिमतादृशंनैवसौख्यं सुतस्त्री गणात्तोषमायातिसम्यक् ॥४॥

भा०टी०–जिस मनुष्य के जन्म लग्न से चौथे स्थान में चन्द्रमा हों वह भाई बन्धुओं से सुख पावे, स्त्री पुत्रों से सन्तोष जनक प्रसन्नता प्राप्त करे, राज द्वार के सब कामों का अधिकारी होवे,धन से उन्मत्त,घमण्डी तथा कपटी होवे, पहली अवस्था (बीस पच्चीस वर्ष) तक ये सुख न मिलें जब दूसरी अवस्था प्राप्त हो (बीस पच्चीस वर्ष के ऊपर) पूर्ण सुख प्राप्त हो यह मनुष्य अत्यन्त सुख भोगने वाला, स्त्रियों का प्रेमी,देवता और गुरु का भक्त, नम्र, निरोग और शत्रु रहित होवे अर्थात् शत्रु इसको न होवें ॥४॥

यदापंचमेयस्यनक्षत्रनाथो ददातीहसंतान संतोषमेव ॥ मतिंनिर्मलांरत्नलाभंचभूमिंकुसीदेन नानाप्तयोऽयावसायात् ॥ ५ ॥

भा०टी० जिस मनुष्य के जन्म लग्न से पांचवे स्थान मे चन्द्रमा हों उसे सन्तोष जनक सन्तान होवें बुद्धि निर्मल रहे रत्नादि लाभ हों भूमि भी प्राप्त करे तथा अनेक प्रकार के लाभ होवें । सारांश यह है कि यह मनुष्य पुत्रवान विद्वान देवता तथा ब्राह्मणो का भक्त निष्कपट प्रियवादी और राजाका प्रिय होवे शत्रु इसे न होवें ॥३॥

रिपौशजतेविग्रहेणापिराजा जितास्तेपिभूयो विधौसंभवांति ॥ तदग्रेरयोनिःप्रभाभूयसोपि प्रतापो ज्वलोमातृशीलोनतद्वत् ॥६॥

भा०टी०-जिस मनुष्य के जन्म लग्न से छठें स्थान मे चद्रमा हों वह बहुत शत्रु वाला होवे राजा भी इससे शत्रुता करे तो पराजय हो जाय यह मनुष्य सब शत्रुआ को पराजय करे (हरा देवे) परन्तु तौभी शत्रु उठतेही रहें, माता की भली भांति सेवा न करे । सारांश यह है कि यह प्रधान पुरुष हो, शत्रु इसे प्रायः दुःख दिया करें, सुन्दर न होवे, और दूसरों को ठगने वाला होवे ॥ ६ ॥

ददेद्दारसंसप्तमेशीतरश्मि र्धनित्वंभवेदध्व-वाणिज्यतोपि ॥ रतिंस्त्रीजनेनिष्टभुग्लुब्धचेताः कृशःकृष्णपक्षेविपक्षाभिभूतः ॥ ७ ॥

भा०टी०--जिस मनुष्य के जन्म लग्न से सातवें स्थान में चन्द्रमा हों तो स्त्री को सुख देवें, देशान्तर के व्यापार से सुख तथा धन प्राप्त होवे, स्त्रीसंग विशेष करे, मीठे पदार्थों का बड़ाही लोभी होवे और चन्द्रमा क्षीण हों तो यह पुरुष

सर्वदा शत्रुओं से हारा हुआ रहे सारांश यह है कि इस लग्न में जन्म लेने वाला पुरुष धर्मात्मा, दयावान, प्रसन्न चित्त, ऐश्वर्यवान, विख्यात और अच्छी बुद्धि वाला होवे ॥७॥

सभाविद्यतेभैषजीतस्यगेहेपचेत्कर्हिचित्क्वाथि-मुद्गोदकानि॥ महाव्याधयोभीतयोवारिभूताःशशी क्लेशकृत्संकटान्यष्टमस्थः ॥८॥

भा० टी०--जिस मनुष्य के जन्म लग्न से आठवें स्थान में चन्द्रमा हों उसके यहां वैद्यों की जमाति लगी रहे तथा मूंग का पानी पकता ही रहे अर्थात ज्वरादि अनेक रोग लगेही रहें पांडु क्षय आदिके रोग हों वा पानी मे डूबने का भय होवे अनेक संकठ हों और दुर्जनो से आपत्ति लगी रहे । सारांश यह है कि पुरुष कमजोर, अल्पायु, झूठा, निर्दयी, दूसरे की स्त्री से प्रेम करने वाला और व्यर्थ भ्रमण करने वाला होता है । अष्टम चन्द्रमा हमेशा दुःख ही देने वाले होते हैं ॥८॥

तपोभावगस्तारकेशोजनस्य प्रजाश्चद्विजा वंदिनस्तंभवंति ॥ भवत्येवभाग्यादिकोयौवनादेः शरीरेसुखंचंद्रवत्साहसंच ॥९॥

भा० टी०--जिस मनुष्य के जन्म लग्न से नवें स्थान में चन्द्रमा हों तो वह पुरुष ब्राह्मण क्षत्री वैश्य आदि सबों से वन्दनीय अर्थात स्तुति करने के योग्य होता है, धन सम्पत्ति वाला एवं सब वस्तुओं का व्यापारी तथा भाग्यशाली होता है, शरीर से सुखी और साहसी तथा चतुर होता है। चंद्रमा के समान दर्शनीय अथवा चन्द्रमा के सदृश इसकी छटा कभी घटती कभी बढ़ती रहती है। सारांश यह है कि इस पुरुष के बहुत मित्र होवें, अन्न वस्त्र सम्पन्न रहे, शत्रुओं की हानि हो सब काय्यों मे सिद्धि पावे और सज्जन जन नित-प्रति प्रशंसा (तारीफ) किया करें ॥९॥

सुखंबांधवेभ्यःखगेधर्मकर्मा समुद्रांगजेशं नरेशादितोपि ॥ नवीनांगनावैभवेसुप्रियत्वं पुरो-जातकेसौख्यमल्पंकरोति ॥१०॥

भा०टी–जिस मनुष्य के जन्म लग्न से दसवें स्थान में चन्द्रमा हों तो वह मनुष्य पुण्यात्मा (पुण्य करने वाला) होवे, भाई बन्धुओं से सुख पावे, राजा महाराजाओं से कल्याण पावे, नवयौवना स्त्रियों के साथ हासविलासादि का सुख होवे और ज्येष्ठ पुत्र से थोड़ा सुख मिले अथवा नौकरों से कम सुख

पावे, सारांश यह है कि राजाओं का प्रिय हो, इष्ट, मित्रों से प्रतिष्ठा पावे, अतिथि सेवक और गुरु तथा देवताओं में भक्ति रखे ॥ १० ॥

लभेद्भूमिपादिंदुनालाभगेन प्रतिष्ठाधिकारां-बराणिक्रमेण॥श्रियोथस्त्रियोंतःपुरेविश्रमंति क्रियावैकृतीकन्यकावस्तुलाभः ॥११॥

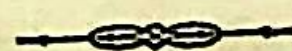
भा०टी०जिस मनुष्य के जन्म लग्न से इगारहवें स्थान में चन्द्रमा हों तो उसे राजाओं से धन धान्य और अधिकार मिले, घरमें स्त्रियां धन दौलत को पाकर आनन्द से प्रसन्न रहें व्यापारादि अनेक प्रकारों से लाभ होवे, अपने कामो में विकार हो जावे और कन्या लाभ होवे, सारांश यह है कि यह मनुष्य चतुर रूपवान, उदार, शत्रुहीन, सुखी और सज्जना से प्रेम रखने वाला होवे ॥११॥

शशी!द्वादशेशत्रुनेत्रादिचिन्ता विचिंत्यःसदा सद्व्ययोमंगलेन ॥ पितृव्यादिमात्रादितोंतर्विषादो नचाप्नोतिकामंप्रियाल्पाप्रियत्वम् ॥१२॥

भा०टी०जिस मनुष्य के जन्मलग्न से बारहवें स्थान में चद्रमा हों उसे शत्रु भय तथा नेत्रादि अंगो में रोगें होने के

कारण चिन्ता होवे, विवाहादि मंगल कार्य में धन खर्च होवे, चाचा मामा आदि कुटुम्बों से मन की अभिलाषा कदाचित (शायद ही) पूर्ण होवे। सारांश यह है कि यह मनुष्य रक्त रोगों से पीड़ित, शत्रुभय से युक्त, मिथ्यावादी (झूठ बोलने वाला) और अल्पायु हो ॥ १२ ॥

इति चन्द्रभावफलानि ।



अथ भौम (मंगल) भाव फलानि ।

विलग्नेकुजेदंडलोहादिभीतिस्तपेन्मानसंके-
सरीकिंद्वितीयः ॥ कलत्रादिघातः शिरोनेत्रपीड़ा
विपाकेफलानांसदेवोपसर्गः ॥ १ ॥

भा० टी०-जिस मनुष्य के जन्म लग्न में भौम (मंगल) हों उसे लाठी से चोट तथा बेड़ी हथकड़ी शूली आदि का भी भय होवे कलत्रादि (लड़के बाले) मर जाँय शिर और नेत्रों मे पीड़ा हो जो काम करे उसका उलटा ही फल होता जाय अतएव इस चिन्तना से सदैव चिन्तित रहे और उद्यम करने में सिंह के समान हो अर्थात बड़ा परीश्रमी होवे ॥१॥

भवेत्तस्यकिंविद्यमानेकुटुंबे धनेंगारकोयस्य-लब्धेधनेकिम् ॥ यथात्रायतेमर्कटःकराठहारं पुनः सन्मुखंकोभवेद्धादभग्नः ॥२॥

भा० टी०-जिस मनुष्य के जन्म लग्न से दूसरे स्थान में मंगल हों वह अत्यन्त धनी हो तथा बराबर और धन आता रहे पर यह धन अपने कुटुम्बों को काम न आवे जैसे लाल गूँजा (करजनी) की माला बनाकर बन्दर के गले में पहिरा देनेसे बन्दर उसे उत्तम पदार्थ समझ क्षणमात्र प्रसन्न हो उस माला की रक्षा करता है एवं प्रकार यह मनुष्य भी धनकी रक्षा करता है अर्थात बड़ा कृपिण तथा मूर्ख होता है, बोल चाल में इससे कोई भी न जीत सके तथा जो इसे जीत लेवे पुनः उसका मुकाबला न करे। सारांश यह है कि यह मनुष्य धनवान, विरोधी, कटुवादी (कठोर बात बोलने वाला) दुष्ट स्वभाव का और प्रताप रहित होवे, मित्रता किसी से न रखे ॥२॥

कुतोबाहुवीर्य्यंकुतोबाहुलक्ष्मीस्तृतीयोनचेन्मंग-लोमानवानाम् ॥ सहोत्थव्यथाभरायतेकेनतेषां तपश्चर्य्ययाचोपहास्यंकथंस्यात् ॥३॥

भा० टी०-जिस मनुष्य के जन्म लग्न से तीसरे स्थान में मंगल हों उसे बाहुबल (पराक्रम) तथा बाहुबलसे अर्जित धन कहां से होवे ? भाइयों की पीड़ा कौन कहे और तपस्या बिगड़ने की लोक में हंसी कैसे होवे ? अर्थात यह मनुष्य पराक्रमी और निज बाहुबल द्वारा धनवान होता है इसके भाइयों को पीड़ा होती है और तपस्यासे उपहास होता है॥३॥

यदा भूसुतः संभवेत्तुर्य्यभावे तदा किं ग्रहाः सानुकूला जनानाम् ॥ सुहृद्वर्गसौख्यं न किंचिद्विचिंत्यं कृपावस्त्रभूमिर्लभेद्भूमिपालात् ॥४॥

भा० टी०-जिस मनुष्य के जन्म लग्न से चौथे स्थान में मंगल हों उसे यदि अन्यान्य ग्रह शुभप्रद [शुभ फल देने वाले) भी हों तो क्या कर सकते हैं अर्थात व्यर्थ हैं इनके सामने कुछ भी चारा नही चलती । इस मनुष्य को भाई वन्धु मित्र तथा माता आदि का सुख कुछभी न होवे केवल इतनाही अच्छा है कि राजा की कृपा से वस्त्र और भूमि मिले तथा दया बनी रहे । सारांश यह है कि यह मनुष्य सुख न पावे बुद्धि हीन हो भाई बन्धु न रहैं, कार्य्य में तत्पर रहे और निन्दक (निन्दा करने वाला) होवे ॥४॥

कुजे पंचमे जाठराग्निर्बलीयान्नजातं नु जातं निहंत्येक एव ॥ तदानीमनल्पा मतिःकिल्बिषेपि स्वयं दुग्धवत्तप्यतेंतः सदैव ॥५॥

भा० टी०-जिस मनुष्य के जन्म लग्न से पांचवें स्थान में मंगल हों उसे भूख अधिक लगे तथा पाचनशक्ति भी हो, पाप कर्म में विशेष बुद्धि तीव्र हो तथा लकड़ीके आंच के दूध के समान सर्वदा संतप्त (व्याकुल) रहे, पांचवें स्थान के मंगल इसे जितने सन्तान होते जायँ सभों को नाशकरते जाँय सारांश यह है कि यह मनुष्य पापी सन्तान रहित और मूर्ख होवे, मित्रता किसीसे भी न रखे ॥५॥

नतिष्ठंतिषष्ठेरयोंगारके वै तदंगैरिताः संगरे शक्तिमंतः॥ मनीषासुखी मातुलेयोनतद्वाद्धिलीयेत वित्तंलभेतापिभूरि ॥६॥

भा० टी०-जिस मनुष्य के जन्म लग्न से छठें स्थान में मंगल हों उसके शत्रु भय से सामने में ठहर न सकें, बलवान भी इससे हार माने, यह बुद्धि का चतुर होवे, मामा इसके सुखी न होवें, एक बार धन नष्ट हो जाय पर पुनः धनवान होवे,

अपने कुल में विख्यात होवे, देखने मे बहुत सुन्दर हो, सज्जन लोगों से प्रशंसा पावे. यह मनुष्य नम्र तथा अच्छे शील स्वभाव वाला होवे ॥६॥

अनुद्धारभूतेनपाणिग्रहेणा प्रयाणेनवाणिज्यतोनोन्निवृत्तिः ॥ मुहुर्भंगदः स्पर्धिनामेदिनीजः प्रहारार्दनैः सप्तमेदंपतिघ्नः ॥७॥

भा० टी०—जिस मनुष्य के जन्म लग्न से सातवें स्थान में मंगल हों वह मनुष्य बराबार अपने शत्रुओं से पराजय प्राप्त करे यदि पुरुष हो तो स्त्री नाश हो जावे और स्त्री हो तो पति नाश हो जावे अर्थात विधवा हो जावे विवाह कार्य्य में निश्चय किसी प्रकार का विघ्न पड़ जावे अर्थात सब बातें बनी बनाई विगड़ जावें विवाह और व्यापारकी आशा में बहुत दिनों तक विदेश में रहे स्त्री इसकी अच्छी न हो कलह होता रहे शत्रु बहुत हों और नीच लोगों से प्रेम रखे तथा साहसी होवे ॥७॥

शुभास्तस्यकिं खेचराःकुर्युरन्ये विधानेपिचेदष्टमेभूमिसूनुः ॥ सखाकिंनशत्रूयतेसत्कृतोपि प्रयत्ने कृतेभूयतेचोपसर्गैः ॥ ८ ॥

भा०टी०--जिस मनुष्य के जन्म लग्न से आठवें स्थान में मंगल हों और नवें स्थान में शुभ फल दायक ग्रह भी हों तो क्या कर सकते हैं अर्थात शुभ फल दायक ग्रहोंको दवा यह अपना खराब फल अवश्य ही दिखलाते हैं परम प्रिय मित्रों को भी अवश्य शत्रु बना देते हैं यदि यह मनुष्य कोई कार्य्य करे तो विघ्न हो जाय और कार्य्य भी भंग हो जावे८॥

महोग्रामतिर्भाग्यवित्तंमहोग्रं तपोभावगोमंगलस्तंकरोति ॥ भवेन्नादिमः श्यालकः सोदरोवा कुतोविक्रमस्तुच्छलाभोविपाके ॥९॥

भा० टी०--जिस मनुष्य के जन्म लग्न से नवें स्थान मे मंगल हों तो वह मनुष्य भाग्यवान तेजवान तथा धनवान होता है बुद्धि उसकी क्रूर होती है ज्येष्ठ भ्राता और ज्येष्ठ (श्यालक) साले नहीं रहते किसी कार्य्य का फल थोड़ा ही मिलता है यह मनुष्य बन्धु वर्गों से रहित होता है और चित्त में चिन्तित तथा अभिमानी होता है ॥९॥

कुलेतस्यकिं मंगलंमंगलोनो जनैर्भूयते मध्यभावे यदि स्यात् ॥ स्वतः सिद्ध एवावतंसीयतेसौ वराकोपि कंठीरवः किं द्वितीयः॥१०॥

भा०टी०--जिस मनुष्य के जन्म लग्न से दसवें स्थान में मंगल पड़ें उसके बहुत से सेवक होवें अपने ही उद्यम से सब मनुष्यों में श्रेष्ट गिना जावे. सिंह के समान पराक्रम वाला होवे और अनेक प्रकार के सुखों को भोगे यह अतिशयोक्ति कहावत प्रसिद्ध है कि " कुले तस्य कि मंगलं मंगलोनो " अर्थात जिसके दशम स्थान में मंगल न हों तो उसके कुल में मंगल कहां से होवे यानी दशम स्थान के मंगल सर्वदा मंगल दिखलाते हैं ॥१०॥

कुजःपीडयेल्लाभगोपत्यशत्रुन्भवेत्सन्मुखोदुर्मुखोपिप्रतापात् ॥ धनं वर्धते गोधनैर्वाहनैर्वास कृच्छ्रन्यतार्थे च पैशुन्यभावात् ॥ १ ॥

भा० टी०--जिस मनुष्य के जन्म लग्न से इगारहवें स्थान मे मंगल हों तो सन्तान एवं शत्रुओं को पीड़ा होती है, यह मनुष्य यदि दुष्ट भी हो तो सर्व साधारण में दर्शनीय गिना जावे शत्रु भी इसके प्रताप से दब कर सुमुख हो जावें, गाय, बैल, घोड़ा, भैंस आदि पशुओं के व्यापार से धन प्राप्त करे, चोरी व ठगी से भी धन मिले और इस निमित्त अपना धन छिपा कर निर्द्धन के समान बनारहे ॥१॥

शताक्षोपितत्सक्षतोल्लोहघातैः कुजोद्वादशोऽर्थस्यनाशं करोति ॥ मृषा किंवदंती भयंदस्युतोवा कलिंपारधीहेतुदुःखं विचिंत्यम् ॥१२॥

भा० टी०--जिस मनुष्य के जन्म लग्न से बारहवें स्थान में मंगल हों तो धन नाश होवे और मनुष्य की क्या गिनती है कि यदि इन्द्र को भी हों तो शरीर में लोहेके हथियार के चोट का चिन्ह होवें, शत्रुओं का नाश भी करे झूठी बातें (निन्दा) भी सच्ची हो जावे सर्प आदि दुष्ट जीवों का भय होवे, कलह होता रहे, पारधी अर्थात् नौकर के लिये दुःख होवे, और व्यर्थ कार्य्यों मे बहुत धन खर्च करे ॥१२॥

इति भौमभावफलानि ।

अथ बुधभावफलानि ।

बुधोमूर्तिगो मार्जयेदन्यरिष्टं वरिष्ठाधियोवैखरीवृत्तिभाजः ॥ जनादिव्यचामी करीभूतदेहाश्चिकित्साविदोदुश्चिकित्सा भवंति ॥१॥

भा० टी०--जिस मनुष्य के जन्म लग्न में बुध हों तो ग्रहों के बुरे फल भी अच्छे ही होते हैं शरीर सोनेके समान

सुन्दर होता है यह मनुष्य वैद्य विद्या में चतुर होता है शिल्पकारी अर्थात तस्वीर लिखने की आमदनी से अपने कुटुम्बों का पालन पोषण करता है कुटिलता में ऐसा निपुण होता है कि किसी के वशीभूत नही होता सन्तान बहुत होते हैं मनुष्य धर्मात्मा होता है ॥१॥

धनेबुद्धिमान् बोधनेबाहुतेजाः सभासंगतो भासते व्यासएव ॥ पृथूदारता कल्पवृक्षस्यतद्वद् बुधैर्भण्यते भोगतः षट्पदोयम् ॥२॥

भा०टी०—जिस मनुष्यके जन्म लग्न से दूसरे स्थान में बुध हो तो वह मनुष्य बुद्धिमान तथा पुरुषार्थी और पण्डितों मे व्यास देव के समान माननीय होता है भ्रमर की नाई उत्तम सुख भोगने वाला कल्पवृक्ष के समान उदार चित्तका होता है सारांश यह है कि धनवान प्रियवादी देवता और ब्राह्मणो का भक्त पण्डित और कीर्तिमान मनुष्य होवे ॥२॥

वणिङ्मित्रतापरायकृद्दवृत्तिशीलो वशित्वंधियो दुर्वशानामुपैति ॥ विनीतोतिभोगं भजेत्सन्यसेद्वा तृतीयेनुजैराश्रितोज्ञे लतावान् ॥३॥

भा०टी०–जिस मनुष्य के जन्म लग्न से तीसरे स्थान में बुध हों वह व्यापारियों से मित्रता कर व्यापार ही से गुजर करता है, नम्र स्वभाव का और सुशील मनुष्य होता है जैसे वृक्ष डाल पत्र से हरे भरे रहते हैं उसी प्रकार यह मनुष्य भी अपने परिवारों के साथ अनेक विषय भोग कर चौथापन में गृहस्थाश्रम से अलग हो ईश्वर भजन में तत्पर होवे ॥३॥

चतुर्थे चरेच्चन्द्रजश्चारुमित्रो विशेषाधिकृद्-
भूमिनाथांगणस्य ॥ भवेल्लेखको लिख्यते वातदुक्तं
तयाशापरैः पैतृकं नो धनं च ॥४॥

भा० टी०–जिस मनुष्य के जन्म लग्न से चौथे स्थान में बुध हों उसे अच्छे मित्र हों, राजद्वार में राजकीय कार्य्यों का पूरा अधिकार होवे, अपने कमाये धन से परिपूर्ण रहे, पिता का धन पावे, शरीर पुष्ट तथा निरोग होवे, खेती एवं व्यापार से सुख मिले ॥४॥

वयस्यादिमे पुत्रगर्भो न तिष्ठेद्भवेत्तस्य मेधार्थ
संपादयित्री ॥ बुधैर्भण्यते पंचमे रौहिणेये किय
द्धियतेकैतवस्याभिचारम् ॥५॥

भा०टी० जिस मनुष्य के जन्म लग्न से पांचवें स्थान में बुध हों उसे तीस वर्ष की अवस्था तक सन्तान न जीवे मर मर जाया करें पर यदि कन्या उत्पन्न हो तो वह जीवै, बाद तीस वर्ष के सन्तान सुख हो, बुद्धि उत्तम होवे, अपनी बुद्धि से धन प्राप्त करे, मारण उच्चारण आदि कर्म्म करता रहे, सन्तान कम हों, पराक्रम भी अल्प ही होवे, यह मनुष्य पाप युक्त क्षुधातुर तथा इष्ट मित्रों से रहित होवे ॥५॥

विरोधोजनानांनिरोधोरिपूणां प्रबाधोयतीनां
चरोधोऽनिलानाम् ॥ बुधेसद्धयेऽव्यावहारोनिधीनां
बलादर्थकृत्संभवेच्छत्रुभावे ॥६॥

भा० टी०—जिस मनुष्य के जन्म लग्न से ~~पांचवें~~ छठवें स्थान में बुध हों तो उसे बहुत मनुष्य के साथ कलह होता रहे मनुष्य निरोगी रहे, ज्ञानी लोगों से ज्ञान पावे, अपने धन को शुभ कार्य्यों में खर्च करे, अपने बाहुबल से धन एकत्र करे, मांस का बड़ा प्रेमी होवे साधु ब्राह्मणों की भक्ति से विमुख रहे और दरिद्री तथा कामातुर होवे ॥६॥

सुतः शीतगोः सप्तमे संयुवत्या विधत्ते तथा तुच्छवीर्यं च भोगे ॥ अनस्तंगतोहेमवद्देहशोभां न शक्नोतितत्संपदो वानुकर्त्तुम् ॥७॥

भा० टी०-जिस मनुष्य के जन्म लग्न से सातवें स्थान में वुध हों तो स्त्रियों का सुख अधिक हो। रतिक्रीड़ा में विशेष स्थम्भन न होवे, शरीर सोने के समान सुन्दर हो, धन भी खूब हो, और यदि वुध सप्तम् भाव में अस्तंगत हों तो उपरोक्त सब फलों को थोड़ा ही पावे ॥७॥

शतं जीविनो रंध्रगेराजपुत्रे भवंतीह देशांतरे विश्रुतास्ते॥निधानं नृपाद्विक्रयाद्वालभंते युवत्युद्भवं क्रीडनं प्रीतिमंतः ॥८॥

भा० टी०-जिस मनुष्य के जन्म लग्न से आठवें स्थान मे वुध हों तो वह मनुष्य शतायु (दीर्घजीवी)होता है अपने देश और विदेशों मे भी ख्यात हो राजा से तथा व्यवहार से धन प्राप्त करता है, गुप्त तथा प्रगट स्त्री सुख भोगता है, इस मनुष्य का शरीर वायु रोग से ग्रसित हो और कुरूप तथा कुलघाती होता है ॥८॥

बुधेधर्मगे धर्मशीलोतिधीमान्भवेद्दीक्षितःस्वर्धुनीस्नातको वा ॥ कुलोद्द्योतकृद्भानुवद्भूमिपालात्प्रतापाधिकोबाधकोदुर्मुखानाम् ॥९॥

भा० टी०–जिस मनुष्य के जन्म लग्नसे नवें स्थान में बुध हों तो वह मनुष्य शोभायमान तथा अत्यन्त धनवान होता है स्वभाव धर्म शील हो तथा बुद्धिमान होवे, गुरु से दीक्षा या (गुरु मुख हो) गुरु उपासक होवे, स्नान दानादि में प्रेम हो, राजा की कृपा से निजकुल में सूर्य्य के समान प्रकाशमान होवे और दुर्जनो का बाधक हो अर्थात नाश करे ॥९॥

मितंसंवदेन्नेमितं संलभेत प्रसादाद्विकारिणौराजवृत्तिः ॥ बुधे कर्मगे पूजनीयो विशेषात्पितुः संपदो नीतिदंडाधिकारात् ॥१०॥

भा० टी०–जिस मनुष्य के जन्म लग्न से दसवें स्थान में बुध हों तो वह मनुष्य पैतृक सम्पत्ति पावे और सब लोगों मे माननीय होवे, नीति विद्या का ज्ञाता हो, राज्याधिकार या किसी को दण्ड और किसी को पुरष्कार (इनाम) देने का अधिकारी होवे बड़ा बक्ता होवे, इसे घोड़े हाथी अनेक हों,

यह मनुष्य रूपवान, भाग्यवान, शील वन्त, और उत्तम वस्त्र, भूषण और वाहन (सवारी) आदि से भरा पूरा रहे स्त्रियों का प्यारा और नम्र स्वभाव का मनुष्य होवे ॥१०॥

विनाल्लाभभावस्थितं भेषजातं नल्लाभौनल्लावरायमानृरायमस्ति ॥ कुतः कन्यकोद्वाहदानंचदेयं कथंभूसुरास्त्यक्ततृष्णाभवंति ११॥

भा०टी० जिस मनुष्य के जन्म लग्न से इगारहवें स्थान में वुध न हों उसे धन कहां से हो, सुन्दरता कैसे पावे, ऋण रहित कैसे हो, कन्यादान में दहेज देनेकी चीज कहांसे लावे, ब्रह्मणों को अयाचक कौन करे अर्थात जिस मनुष्य के जन्म लग्न से इगारहवें स्थान में बुध हों वह उपरोक्त कामों के करने के गोग्य होता है अन्य नहीं ॥ ११॥

नचेद्द्वादशे यस्य शीतांशुजातः कथंतद्गृहं भूमिदेवाभजांति ॥ रणोवैरिणो भीतिमायातिकस्माद्धिरायादिकाशं शठः कोनुभूयात ॥१२॥

भा०टी०-जिस मनुष्य के जन्म लग्न से बारहवें स्थान में बुध हों तो उसके घरमे ब्राह्मण आवें अर्थात यज्ञ होतारहे,

संग्राम में शत्रु भयभीत हो जायें, स्वभाव का दुष्ट न हो (उत्तम होवे) और उत्तम कार्य्यों में धन खर्च करे ॥१२॥

इति बुधभावफलानि ।

अथ गुरुभावफलानि ।

गुरुत्वं गुणैर्लग्नगेदेवपूज्य सुवेषी सुखी दिव्य देहोल्पवीर्य्यः॥ गतिर्भाविनी पारलौकीविचिन्त्या वभूनी व्ययंसंबलनंबूजंती ॥१॥

भा० टी०-जिस मनुष्य के जन्म लग्नमें गुरु(बृहस्पति) हों तो वह मनुष्य सुखी सुन्दर शोभायमान भूषणोंसे भूषित,अल्प बल वाला चतुर और पण्डित होता है तथा लोगों से प्रतिष्ठा पाता है । शरीरान्त में भी उत्तम गति होती है। और सुख में धन खर्च करता है ॥१॥

कवित्वे मतिर्दंडनेतृत्वशक्तिर्मुखे दोषदृकशी घ्रभोगार्त्तएव ॥ कुटुंबे गुरौ कष्टतो द्रव्यलाब्धिः सदानोधनं विश्रमेद्यत्नतोपि ॥२॥

भा० टी०-जिस मनुष्य के जन्म लग्न से दूसरे स्थान में बृहस्पति हों वह मनुष्य कवि होता है अर्थात उसे कवित्त दोहा चौपाई आदि बनाने की शक्ति होती है राज काज में भी अधिकार रहता है । यह खूब बक्ता (बोलने वाला) होवे पर मुख में कुछ बीमारी भी रहे, रसिक और कामातुर होवे, धनकी प्राप्ति कष्ट से हो अर्थात धन जमा न होने पावे आवे सो खर्च होता चला जाय ॥ २ ॥

भवेद्यस्य दुश्चिक्यगो देवमंत्री लघूनां लघी यान्सुखं सोदराणाम् ॥ कृतघ्नो भवेन्मित्रसार्थेन मैत्रो ललाटोदये व्यर्थलाभो न तद्वत् ॥३॥

भा०टी०-जिस मनुष्य के जन्म लग्न से तीसरे स्थान में बृहस्पति हों वह क्षुद्रों मे भी अति क्षुद्र होवे भाइयों का उसे बहुत सुख हो, कृतघ्न हो, मित्रों से मित्रता न रखे । बहुत भाग्योदय होने पर भी भरपूर धन दौलत न होवे पर सुखी रहे ॥३॥

गृहद्वारतः श्रूयतेवाजिहेषा द्विजोच्चारितोवेदघोषोपितद्वत् ॥ प्रतिस्पर्द्धिनः कुर्वतेपारिचर्य्यं चतुर्थे गुरौ तत्समंतर्गतंच ॥४॥

भा०टी०-जिस मनुष्य के जन्म लग्न से चौथे स्थान में वृहस्पति हों उसके दरवाजे पर घोड़े हिनहिनाते रहें और ब्राह्मणों के मुख से वेदध्वनि होती रहे। शत्रु नौकरां के तरह बने रहें तौभी दुखी ही रहें कभी प्रबल न होने पावें ॥४॥

विलासे मतिर्बुद्धिगे देवपूज्ये भवेज्जल्पकः कल्पकोल्लेखकोवा ॥ निदानेसुतेविघ्नमानेपिभूतिः फलोपद्रवः पक्वकाले फलस्य ॥५॥

भा०टी०-जिस मनुष्य के जन्म लग्न से पांचवें स्थान में वृहस्पति हों वह विलासी एवं बक्ता होवे तथा न्याय शास्त्र का ज्ञाता और तर्कवितर्क करने वाला,सुन्दर दिव्य अक्षरों का लिखवैया होवे,जो कार्य्य करे उसका फल मिलने में विघ्न हुआ करे, धन काम ही भर होवे अधिक न हो,सन्तान बहुत होवे, गुणी और विख्यात हो, बुद्धि निर्मल रहे, प्रिय बात बोलने वाला और ब्राह्मणों का सेवक होवे ॥५॥

रुगार्तो जनन्यां रुजः संभवेयू रिपौवाक्पतौ शत्रुहंतृत्वमेति ॥ बलादुद्धतः कारणे तस्य जेता महिष्यादिशर्मा न तन्मातुलानाम् ॥६॥

भा०टी०-जिस मनुष्य के जन्म लग्न से छठें स्थान में वृहस्पति हों सो यदि बीमार भी हो तो शत्रुओं को मार भगाने में तत्पर. होवे तथा सामर्थ्य भी रखे, अर्थात् इससे कोई भी शत्रु न जीत सके, शत्रुओं से लड़ने के लिये हमेशा उद्यत रहे मामा के कुल में सुख न हो, और माता रोगी रहे ॥६॥

मतिस्तस्यबह्वी विभूतिश्चबह्वी रतिर्वैभवेद्भामिनीनामबह्वी ॥ गुरुर्वर्गकृद्यस्यजामित्रभावे सपिंडाधिकोऽखंडकंदर्पएव ॥७॥

भा०टी०-जिस मनुष्य के जन्म लग्न से सातवें स्थानमें गुरु हों सो बुद्धिमान, चतुर और बड़ा विचारमान होता है, धन भी उसे खूब होवे, स्त्री संगम थोड़ा हो, अहंकारी हो, अपने कुल के और लोगों से बलवान हो, कामदेव के समान सुन्दर हो, पाप रहित हो, सत्य बोलने वाला हो, और गुरु की भक्ति में सर्वदा लगा रहे ॥७॥

चिरंनोवसेत्पैतृकेचैवगेहे चिरस्थायिनी तद्गृहंतस्यदेहम् ॥ चिरंनोभवेत्तस्यनीरोगमंगं गुरुर्मृत्युगोयस्यवैकुंठगन्ता ॥८॥

भा०टी०-जिस मनुष्य के जन्म लग्न से आठवें स्थान में गुरु (वृहस्पति) हों सो अपने पिता के घर में बहुत दिनों तक न रहे अर्थात् अपने पराक्रम से घर बना कर रहे तथा एक घर में बहुत दिनों तक न रहे, बहुत न जीवे, कभी कभी रोग हो जाया करे यह शरीरान्तमें वैकुण्ठ वास पाता है ॥८॥

चतुर्भूमिकं तद्गृहं तस्यभूमी पतेर्वल्लभो वल्लभा भूमिदेवाः ॥ गुरौ धर्मगे बांधवाः स्युर्विनीताः सदालस्यतो धर्मवैगुण्यकारी ॥९॥

भा०टी०-जिस मनुष्य के जन्म लग्न से नवें स्थान में गुरु हों सो राजा महाराजा लोगों का प्रिय होवे, आलस से सन्ध्या-बन्दन आदि नित्य क्रियाओं को न करे, इसके घर में चारो तरफ द्वार हों तथा चौरास्ते पर बना हो,कुछ जमीदरी भी हो ब्राह्मणों से विशेष प्रेम रखे और परिवार के लोग इसके भय से दबे रहें ॥९॥

ध्वजामंडपे मंडलं चित्रशालं पितुःपूर्वजेभ्यो-ऽपितजोऽधिकत्वात् ॥ नतुष्टो भवेच्छर्मणापुत्रकाणां पचेत्प्रत्यहं प्रस्थसामुद्रमन्नम् ॥१०॥

भा०टी०-जिस मनुष्य के जन्म लग्न से दसवें स्थान में गुरु हों उसका गृह ध्वजा पताका आदि अनेक प्रकार की चित्र-कारियों से सज्जित रहे, स्त्री पुत्रादि का गृहभी एवंप्रकार चित्र विचित्र की रचनाओं से सुसज्जित रहे,अपने पिता से भी अधिक तेजवान हो, पर पुत्र का द्वेषी रहे, इस मनुष्य के इतने परि-वार हों कि इसके यहां कि रसोई में १ प्रस्थ वा १ पाथा नमक खर्च होवे ॥१०॥

अकुप्यंचलाभे गुरौक्विन्नलभ्यं वदंत्यष्टधीमंत-मन्येमुनीन्द्राः ॥ पितुर्भारभृत्स्वीगजास्तस्यपंच-परार्थस्तदर्थो नचेद्दैभवाय ॥११॥

भा०टी०-जिस मनुष्य के जन्म लग्न से दसवें स्थान में गुरु हों सो धनवान हावे, इन्द्रादि मुनियों के समान पण्डित होवे, पिता का सेवक हो सुन्दर पांच पुत्र हों और धन अपने सन्तान को काम आवे स्वभाव का कृपिण होवे नित्य लाभ होता रहे भूषण बसन तथा भोजन से सम्पन्न रहे और उत्ताम गृह तथा अच्छी स्त्री पावे ॥११॥

यशः कीदृशं सद्व्ययेसाभिमाने मतिःकीदृशी वंचनाचेत्परेषाम् ॥ विधिः कीदृशोर्थस्यनाशोहि येन त्रयस्तेभवेयुर्व्यये यस्यजीवः ॥१२॥

भा०टी०-जिस मनुष्य के जन्म लग्न से बारहवें स्थान में गुरु हों उसे खूब खर्च करने पर भी यश नहीं मिलता अप-यशही हो जाता है दूसरों को ठगने वाली इसकी मति होवे प्रायः ऐसे कार्य्यों को करे जिससे व्यर्थ धन खर्च हो जाय लोक परलोक कहीं काम न आवे यश मति और विधि ये तीनो इसके बिरुद्ध होवें जिससे कुछ कष्ट होवे ॥१२॥

इति (गुरु) बृहस्पतिभावफलानि ।

अथ शुक्रभावफलानि ।

समीचीनमंगंसमीचीनमंगःसमीचीनश्चांगना भोगयुक्तः ॥ समीचीनकर्मा समीचीनशर्मा समीचीनशुक्रो यदालग्नवर्ती ॥१॥

भा०टी०--जिस मनुष्य के जन्म लग्न में शुक्र षड्वल युक्त हों तो सब उसके अंग सुन्दर होते हैं मनुष्य सत्संगी

होता है सुन्दर रूपवती स्त्रियों का सुख भोग कर उत्तम उत्तम यज्ञ दानादि कर्मो को करता और उत्तम सुख भोगता है, शास्त्र में अभ्यासहो प्रिय बाणी बोले और सब इल्मोका जानने वाला होता है ॥१॥

सुखं चारुभाषं मनीषापि चार्वी सुखं चारु चारूणि वासांसि तस्य ॥ कुटुम्बस्थितःपूर्वदेवस्य पूज्यः कुटुंबेनार्कि चारु चार्वंगिकामः ॥२॥

भा०टी०–जिस मनुष्य के जन्म लग्न से दूसरे स्थान में शुक्र हों सो सुन्दर रूप वाला, चतुर, बुद्धिमान एवं धर्ममे तत्पर होता है मीठी बात बोलता है उत्तम वस्त्र मिले तथा परिवारउसके सुखदायक होवें ॥२॥

रतिः स्त्रीजने तस्यनो बंधुनाशो गुरुर्यस्यदुश्चिक्यगो दानवानाम् ॥ न पूर्णो भवेत्पुत्रसौख्ये पिसेनापतिःकातरोदानसंग्रामकाले ॥३॥

भा०टी०--जिस मनुष्य के जन्म लग्न से तीसरे स्थानमें शुक्र हों तो उसे स्त्रियों से प्रीति न रहे तथा भाईका सुख हो पुत्र सुख होने पर भी तृष्णा लगी ही रहे और दान पुण्य तथा सग्रामं में कातर हो ॥३॥

महित्वेधिको यस्य तुर्योऽसुरेज्यो जनैः किंज नैश्चापैरुष्टतुष्टैः ॥ कियत्पोषयेज्जन्मतः संजनन्या अधीनार्पितोपायनैस्वपूर्णः ॥४॥

भा० टी०-जिस मनुष्य के जन्म लग्न से चौथे स्थान में शुक्र हों उसका चित्त पूजा पाठ तथा उत्सव के कार्य्यों में अधिक लगे । खुश वा नाराज जितने मनुष्य हों सभी इसकी आदर करें तथा मनुष्यों के दिये भेंट से मनोर्थ परिपूर्ण होवें, माता की खूब सेवा करे ॥४॥

सुपुत्रेपि किं यस्य शुक्रो न पुत्रे प्रयासेन किं यत्नसंपादितार्थः ॥ व्युदर्कंविनामंत्रमिष्टास-नाभ्यामधीतेन किंचेत्कवित्वे न शक्तिः ॥५॥

भा० टी०-जिस मनुष्य के जन्म लग्न से पांचवें स्थान में शुक्र हों तो उसे पुत्र रहते भी पुत्र सुख न हो, पर विना परिश्रम किये ही ऐश्वर्य्यवान हो, इच्छानुसार पदार्थ मिलते रहें, काव्य रचना जाने, अर्थात् पंचम शुक्र जिस मनुष्य के होते हैं वह कवि हो और धनधान्य तथा उत्तम भोगों क भोगने वाला होता है ॥ ५ ॥

सदा दानवेज्ये सुधासिक्तशत्रुर्व्ययः शत्रुगे चोत्तमौ तौ भवेताम् ॥ विपद्येत संपादितं चापि कृत्यं तपेन्मंत्रतः पूज्यसौख्यं नधत्ते ॥६॥

भा° टी०--जिस मनुष्य के जन्म लग्न से छठें स्थान में शुक्रहों सो देवताओं के समान शत्रुसंग्राम में दृढ़ हो, उत्तम कामो में धन खर्च करे, जाति गुण एवं क्रिया मे श्रेष्ठ हो पर जो काम करे उसमें सफलता प्राप्त न करे दुष्ट प्रकृति वालों से दुःख तथा गुरुजन पूज्य पुरुषों से सुख पावे ॥ ६ ॥

कलत्रे कलत्रात्सुखंनो कलत्रात्कलत्रं तु शुक्रे भवेद्रत्नगर्भम् ॥ विलासाधिको गरायते च प्रवासी प्रयासाल्पकः केन मुह्यंति तस्मात् ॥७॥

भा० टी०-जिस मनुष्य के जन्म लग्न से सातवें स्थान में शुक्र हों उसे स्त्री सुख हो पर अनेक पीड़ाओं से पीड़ित रहे, कमर मे पीड़ा रहे, इस पुरुष की स्त्री रत्नगर्भा (सत्पुत्र पैदा करने वाली) होवे तथा अति कामी और आलसी होवे और ऐसा चतुर होवे कि इस की चतुराई से सभी लोग मोहित रहें ॥ ७ ॥

जनः क्षुद्रवादी चिरं चारु जीवेच्चतुष्पात्सुखं दैत्यपूज्यो ददाति ॥ जनुष्यष्टमे कष्टसाध्योऽजयार्थः पुनर्वर्द्धते दीयमानं धनर्णम् ॥८॥

भा० टी०-जिस मनुष्य के जन्म लग्न से आठवें स्थान में शुक्र हों तो उसे गाय बैल घोड़ा आदि पशुओं का अधिक सुख हो, मनुष्य चुगलखोर होवे और सुख से बहुत दिनो तक जीवे पर हमेशा ऋणी बना रहे ॥८॥

भृगौ त्रित्रिकोणे पुरे केन पौराः कुसीदेन ये वृद्धिमस्मै ददीरन् ॥ गृहे ज्ञायते तस्य धर्मध्वजादेः सहात्थोदिसौख्यं शरीरे सुखं च ॥९॥

भा०टी०-जिस मनुष्य के जन्म लग्न से नवें स्थान में शुक्र हों उसके गांव भरके लोग उस मनुष्य का क़र्जदार बनेही रहें कोई भी इससे ऋण लने से ने बचा होवे यह मनुष्य सदावर्त्त बांटे तथा दास दासियों से संयुक्त ऐश्वर्य्य कर विख्यात कीर्ति वाला मनुष्य होवे ॥९॥

भृगुः कर्मगो गोत्रवीर्यं रुणाद्धि क्षयार्थं भ्रमः किन्न आत्मीय एव ॥ तुलामानतो हाटकं विप्रवृत्त्या जनाडंबरैःप्रत्यहं वा विवादात ॥१०॥

भा० टी०–जिस मनुष्य के जन्म लग्न से दसवें स्थान में शुक्र हों वह पुरुष बहुत सन्तान वाला होता है धन भी इसे खूब होता है यह पुरुष सौ पल वा इस से भी अधिक सोना रखे तथा सोना तौलने की परियानी लोगों को आडंबर दिखाने के लिये लिये रहे अपने पिता से बढ़ चढ़ कर नाम मर्याद करे और ऐश्वर्य्यवान तथा धर्मात्मा होवे॥१०॥

भृगुर्लाभगो लाभदो यस्य लग्नात्सुरूपंमहीं-पंच कुर्य्याच्च सम्यक् ॥ लसत्कीर्तिसत्यानुरागं गुणाढयं महाभोगमै वर्य्ययुक्तंसुशीलम् ॥११॥

भा०टी०-जिस मनुष्य के जन्म लग्न से इगारहवें स्थान में शुक्र हों वह अच्छा सुभाव वाला सुन्दर कीर्तिवान तथा सत्य बालने वाला होवे ऐश्वर्य्य भी खूव हो अनेक सुख तथा राजाओं के समान राज करे। जैसे बली शुक्र हों वैसाही उक्त फलोंको भी जानना ॥११॥

कदाऽप्येतिवित्तं विलीयेतपित्तं सितो द्वादशे केलिसत्कर्मशर्मा ॥ गुणानां च कीर्तिक्षयंमित्रवैरं जनानां विरोधं सदाऽसौ करोति ॥१२॥

भा०टी०- जिस मनुष्य के जन्म लग्न में बारहवें स्थान में शुक्र हों वह कौतुक वा धर्मके कार्य्यों में धन खर्च करने को सुख माने, शोभा तथा गुणहीन हो, सब आदमियों से विरोध होवे, मित्रोंसे भी बैर भाव रखे, कभी धन प्राप्त हातो आधिक खर्च करने के कारण कष्ट हो जाय, शरीर पित्त प्रकृति का हो तथा धातु क्षीण होकर कफ की बीमारी हो जाया करे ॥१२॥

इति शुक्रभावफलम्।



अथ शनिभावफलानि।

धनेनातिपूर्णोऽतितृष्णाविषादी तनुस्थेर्कजे स्थूलदृष्टिनरःस्यात् ॥ विषं दृष्टिजंत्वादिकृव्द्याधि-बाधाः स्वयं पीडितो मत्सरावेशएव ॥१॥

भा० टी०--जिस मनुष्य के जन्म लग्न में शनि हों वह धन की बहुत तृष्णा रखे और धन होने परभी तृप्ति न हो, कभी प्रसन्न न रहे, बारीकी की बातों को न सोंचे शत्रु इसके देखते ही भाग जाँय मानशिक चिन्ता लगी रहे नेत्र रोग भी हों और दूसरों की भलाई देखकर जल मरे ॥१॥

सुखापेक्षया वर्जितोऽसौ कुटुंबात्कुटुंबे शनौ वस्तु किं किं न भुंक्ते॥ समं वक्ति मित्रेण नित्यं वचोपि प्रसक्तिंविना लोहकं को लभेत ॥२॥

भा० टी०--जिस मनुष्य के जन्म लग्न से दूसरे स्थानमें शनि हों वह सुख केलिये परिवारों को जोड़े पर सुख न हो, परदेश जाये तो अनेक सुख भोग करे, लोहे का औजार अनायास बहुत पावे. कटुवादी (कड़ी बात बोलने वाला) धनराहित (दरिद्र) अनेक दुःखां से परिपूर्ण दुबला पतला, और बहुत शत्रु वाला मनुष्य होवे ॥२॥

तृतीय शनौ शीतलं नैव चित्तं जनादुद्यमाज्जायते युक्तभाषी॥ अविघ्नं भवेत्कर्हिचिन्नैवभाग्यं दृढाशः सुखी दुर्मुखः सत्कृतोपि ॥३॥

भा० टी०—जिस मनुष्य के जन्म लग्न से तीसरे स्थान में शनि हों उसका मन भाइयों से शान्त न रहे तथा निर्विघ्नता से धन भी प्राप्त न कर सके, कुछ धन मिले भी तो बहुत विघ्न होवे, धन पर तृष्णा बनी ही रहे, अतएव कभी सुखी न रहे जो लोग इसका सत्कार (आदर) भी करें तो उनसे अपनी दुष्टता न छोड़े, सर्वदा मुख से बुरी बात निकलती रहें ॥३॥

चतुर्थे शनौ पैतृकं याति दूरं धनं मंदिरंबंधुवर्गापवादः ॥ पितुश्चापि मातुश्च संतापकारि गृहे वाहनेहानयो वातरोगी ॥४॥

भा०टी०--जिस मनुष्य के जन्म लग्न से चौथे स्थान म शनि हों उसे पिता का धन तथा घर द्वार न मिले कदाचित कुछ मिले भी तो उससे अलग (दूर) रहे, परिवारों से कलंक तथा निन्दा होवे, माता पिता को सन्ताप (क्लेश) हो और यह मनु य बात व्याधि से ग्रसित रहे ॥४॥

शनौ पंचमे च प्रजाहेतुदुःखी विभूतिश्चला तस्य बुद्धिर्न शुद्धा ॥ रतिर्दैवते शब्दशास्त्रेन तद्वत्कलिर्मित्रता मंत्रतः क्रोडपीडा ॥५॥

भा०टी०-जिस मनुष्य के जन्म लग्न से पाचवें स्थान में शनि हों वह सन्तान के लिये हमेशा दुःखी रहे, धन कभी घटे और कभी बढ़ता रहे, बुद्धि इसकी निष्कपट न होवे, देवता तथा वेद शास्त्र में पूर्ण प्रेम तथा विश्वास न हो, मित्रों से कलह करता रहे और इसके कांख में घाव वा रोग होवे ॥ ५ ॥

अरेर्भूपतेश्चौरतो भीतयः किं यदीनस्य पुत्रोभवेद्यस्य शत्रौ ॥ नयुद्धे भवेतत्सन्मुखे तस्य योद्धा महिष्यादिके मातुलानां विनाशः ॥६॥

भा० टी०-जिस मनुष्य के जन्म लग्न से छठें स्थान में शनि हों उसे राजा तथा चोरों से भय नही होता और इतना बलवान होता है कि कोइ भी लड़ने वाले इसके आगे नहीं ठहरते, गाय भैंस आदि पशुओ से सुख होवे और इसके मामा के खानदान वालों को कष्ट होवे ॥६॥

सुदाराश्च मित्रं चिरश्चारु वित्तं शनौ द्यूनगे दंपती रोगयुक्तौ ॥ अनुत्साहसंतप्तकृद्धीनचेताः कुतो वीर्य्यवान् विह्वलो लोलुपः स्यात् ॥७॥

भा० टी०--जिस मनुष्यके जन्म लग्न से सातवें स्थान में शनि हो उसे अति रूपवती सुन्दर स्त्री मिले मित्रों से हित कार्य्य न हो तथा धन उत्तम कार्य्यों मे न लगे और स्त्री पुरुष दोनों रोगी बने रहें तथा निर-उत्साही और मलीन रहे, बड़ा लोभी हो, दुष्ट स्त्रियों से प्रेम होवे बुद्धि चतुर हो शास्त्र में ज्ञान तथा सज्जनों की संगति न करे पाप कर्म में लगा रहे ॥ ७ ॥

वियोगे जनानां त्वनौपाधिकानां विनाशौ-धनानां सकोपस्य न स्यात् ॥ शनौरंध्रगेव्याधितं क्षुद्रदर्शी तदग्रे जनः कैतवं किं करोतु ॥८॥

भा०टी०--जिस मनुष्य के जन्म लग्न से आठवें स्थान में शनि हो उसे सत्संगी तथा ज्ञानी मनुष्यों से प्रेम न होवे दुष्टों की संगति में लगा रहे, अपने परिवारों से वियोग हो ऐसा कौन अष्टम् शनि वाला पुरुष होगा जिसका धन नाश न हुआ हो अर्थात् अवश्य नाश होता है और यह पुरुष रोगी तथा महाधूर्त (ठग) होता है ॥८॥

मतिस्तस्य तिक्ता न तिक्तंतु शीलं रतियोंग शास्त्रे गुणो राजसः स्यात् ॥ सुहृद्वर्गतोदुःखितो दीनबुद्ध्या शनिर्धर्मगः कर्मकृत्संन्यसेद्वा ॥९॥

भा०टी०–जिस मनुष्य के जन्म लग्न से नवें स्थान में शनि हों उसकी मति विषय बासना में न रहे और स्वभाव भी बुरी न हो योग शास्त्र के अभ्यास में जी लगा रहे, रजोगुणी स्वभाव हो, भाई बन्धुओं के दुखों को देख देख कर स्वयं दुःखित रहे, सब लोगों का शुभ चाहे, अथवा सन्यासी हो जाय ॥९॥

अजातस्य माता पिता बहुरेव वृथा सर्वतो दुष्टकर्माधिपत्यात् ॥ शनैरेधते कर्मगः शर्ममंदो जयो विग्रहे जीविकानांतु यस्य ॥१०॥

भा०टी०-जिस मनुष्य के जन्म लग्न से दसवें स्थानमें शनि हों उसके बाल्यावस्था ही में माता पिता मर जायें और बकरी के दूध से पाला जाय अपने कमाई की आशा हो तथा निज बाहुबलसे धन प्राप्त करे और अधिकार पाकर सब लोगों से विना प्रयोजन ही लड़ कर जीत जाय तथा सुख पावे और थोड़े ही दिन तक जीवे ॥१०॥

शनौ व्योमगे विंदते किं च माता सुखं शैशवं दृश्यतेकिंतु पित्रा निधिःस्थापितो व्यापिता वा कृषिश्च प्रणाशयेद् ध्रुवंदृश्यतो दैवतो वा ॥११॥

भा०टी०-जिस मनुष्य के जन्म लग्न से दसवें स्थानमें शनि हों उसका फल प्रकारान्तर से भी कहते हैं कि क्या वह पुरुष माता का सुख देखता है ? क्या उसके पिता उसकी बाल लीला (लड़कपन के खेलों) को देखते हैं ? कदापि नहीं इसके पिता की धरी धराई सम्पत्ति भी जल में बह जाति है वा अग्नि से नष्ट हो जाती है ॥११॥

स्थिरं वित्तमायुः स्थिरं मानसं च स्थिरो नैव रोगादयो न स्थिरशाशि ॥ अपत्यानि शूरः शतादेक एव प्रपंचाधिको लाभगे भानुपुत्रे ॥१२॥

भा०टी०-जिस मनुष्य के जन्म लग्न से इगारहवें स्थान में शनि हों तो उसका धन स्थिर रहे खर्च न होवे,आयु बहुत हो, बुद्धि भी स्थिर रहे,शरीर निरोग रहे, सन्तान शोक देखे, बड़ा प्रपंची (जाल फरेब जानने वाला) हो, रागद्वेषादि में निपुण हो और शूर (बड़ा बलवान) होवे ॥१२॥

व्ययस्थे यदासूर्य्यसूनौ नरः स्यादशूरोऽथवा निस्त्रपो मंदनेत्रः ॥ प्रसन्नो बहिर्नो गृहेलग्नपश्च व्ययस्थो रिपुध्वंसकृद्यज्ञभोक्ता ॥१२॥

भा०टी०-जिस मनुष्य के जन्म लग्न से बारहवें स्थान में शनि हों तो वह मनुष्य बड़ा डरपोकना और बेहया(निर्लज्ज) होता है आंखों में रौशनी कम होती है। यह मनुष्य विदेश रहने में खुश रहता है। यदि शनि लग्नेश भी हो तो सब शत्रुओं को नाश करे, यज्ञ के द्रव्य से धन प्राप्त करे, बुरे कामों में खर्च करे और पाप में लगा रहे बुरे मित्रोकी संगति करे दरिद्र रहे, सज्जनो से प्रेम न होवे और कलह करता रहे ॥ १२ ॥

इति शनिभावफलानि।

अथ राहुभावफलानि।

स्ववाक्ये समर्थः परेषां प्रतापात्प्रभावात् समाच्छादयेत्स्वान्परार्थान्न्तमोयस्यलग्नेनसभगनारि वीर्य्यः कलत्रे धृतिं भूरिदाशोपि यायात् ॥१॥

भा० टी०—जिस मनुष्य के जन्म लग्न में राहु हो वह शत्रुओं को जीते, दूसरे के प्रताप से अपने बातों को ऊपर करे तथा दुसरे ही के प्रताप से, अपना तथा अपने पराये लोगों के कामों को करे, बहुत स्त्रियों के होते भी चित्त में सन्तोष न रखे बड़ा कामी होवे ॥१॥

कुटुंबे तमो नष्टभूतं कुटुंबं मृषा भाषिता निर्भयो वित्तपालः ॥ स्ववर्गप्रणाशो भयंशस्त्रतश्चेदवश्यं खलेभ्यो लभेत्पारवश्यम् ॥२॥

भा० टी०—जिस मनुष्य के जन्म लग्न से दूसरे स्थान में राहु हो उसके परिवार दूसरे के आधीन रहते हैं जिससे बिके हुये के बराबर होते हैं,इस मनुष्य को शस्त्र (हथियार) से चोट लगने का भय होता है,तथा झूठा, निर्भय और कृपण, होता है । यह धूर्त कलही और अपना धन नाश कर दरिद्र बना रहता है तथा सर्वदा भ्रमण करने में तत्पर भी रहता है ॥ २ ॥

न नागोऽथ सिंहो भुजो विक्रमेण प्रयातीहासिंही सुते तत्समत्वम् ॥ तृतीये जगत्सोदरत्वंसमेवि प्रयातोऽपि भाग्यं कुतो यत्नहेतुः ॥३॥

भा० टी०--जिस मनुष्य के जन्म लग्न से तीसरे स्थान में राहु हों, वह पुरुष बली प्राक्रमी हो, सिंह के बच्चेके समान तो न हो किंतु मनुष्य गणना में यथोचित हो। ऐश्वर्य और यश भी मिलेअपना खोया हुआ धन भी पावे शत्रु उससे हारता जावे, रस विषय में लीन रहे कुटुंब से सुख नहीं पशु से हानी हो, गृहमें दरिद्र का वास रहै ॥ ३ ॥

चतुर्थे कथं भ्रातृनैरुज्यदेहो हृदि ज्वालया शीतलं किं बहिःस्यात् ॥सचेदन्यथा मेषगःकर्कगो वा बुधर्क्षेऽसुरो भूपतेर्बंधुरेव ॥४॥

भा०--टी०--जिस मनुष्य के जन्म लग्न से चौथे स्थान में राहु हों वह पुरुष स्वयं तथा उसकी माता रोगी रहे जिससे चित्तमें सदैव चिन्ता की ज्वाला लगी रहे चिन्ता से शरीर कभी भी शीतल न हो और यदि चौथा राहुमेष१ कर्क४कन्या६ मिथुन ३ राशियोंमें से किसीमें होवे तो सुफल जानो ॥४॥

सुते तत्सुतोत्पत्तिकृत्सिंहिकायाः सुतोभामनीचिंतया चित्ततापः ॥ सति क्रोडरोगे किमाहारहेतुः प्रपंचेन किं प्रापकादृष्टवर्ज्यम् ॥५॥

भा०टी०-जिस मनुष्य के जन्म लग्न से पांचवें स्थान में राहु हों तो लड़का पैदा होवे, स्त्री को कर्कशा होने के कारण चित्त दुःखित रहे कांखा में बीमारी हो तथा मन्दाग्नि भी होवे और बहुत यत्न करने पर भी धन न मिले ॥५॥

बलं बुद्धिवीर्यंधनं तद्वशेन स्थितेवैरिभावेपि येषां जनानाम ॥ रिपूणामरण्यं दहेदेवशक्र स्थिरं मानसं ततुला नो पृथिव्याम् ॥६॥

भा०टी० जिस मनुष्य के जन्म लग्न से छठें स्थान में राहु हों उसके सब शत्रु नष्ट हो जावें, शरीर में बल बुद्धि थथा चतुरता खूब होवे, किन्तु चित्त स्थिर न रहे उपरोक्त फलों में इस मनुष्य की बराबरी कोई भी नहीं कर सकता है ॥ ६ ॥

विनाशं लभेयुर्द्युने तद्युवत्यो रुजाधातुपाका दिना चंद्रमर्दी ॥ कटाहे यथा लोडयेज्जातवेदा वियोगापवादाः शमं न प्रयांति ॥७॥

भा० टी०-जिस मनुष्य के जन्म लग्न से सातवें स्थान में राहु हों वह मनुष्य आग पर चढ़ी कड़ाही के समान सन्तप्त

रहता है तथा स्त्रियां इतनी रोगी रहें कि रसादि (धातु) तथा दवाइयां घोटतेही रहें, स्त्री हानि भी होवे,भाई बन्धुओंसे विछोह होवे और लोकापवाद (झूठे कलंक) भी लगते ही रहें ॥ ७ ॥

नृपैः पंडितैर्वंदितो निंदित स्वैः सुकृद्भाग्यलाभो सकृक्लेश एव ॥ धनं जातकं तं जनाश्च त्यजंति श्रमग्रंथिकृद्रंध्रगो ब्रध्नशत्रुः ॥८॥

भा०टी०-जिस मनुष्य के जन्म लग्न से आठवें स्थान में राहु हों उसे पेटमें बात रोग (वायु गोला) वा पिल्ही आदि की बीमारी होवे, अपने परिवार इसे छोड़ देवे पिता का कमाया धन भी कुछ न मिले, राजा तथा पण्डितों से मान पावे, अपने परिवार निन्दा करें कभी ऐश्वर्य्य घट जाय कभी बढ़ जाय सदा एकसा न रहे ॥८॥

मनीषी कृतं न त्यजेद्बंधुवर्गंसदा पालयेत्पूजितः स्याद्गुणैः स्वैः ॥ सभाद्योतकोयस्य चेत्रित्रिकोणे तमः कौतुकी देवतीर्थे दयालुः ॥९॥

भा०टी०–जिस मनुष्य के जन्म लग्न से नवें स्थान में राहु हों वह मनुष्य बुद्धिमान, अपने गुणों से पूज्य (माननीय) और दयालु होता है देवता तथा तीर्थमें प्रसन्न रहे और अपने गुणों से जहां रहे तथा सबों को कृत्कृत्य किये रहे, अहसान मन्द होवे सर्वदा अपने परिवारोंका पालन पोषण करता रहे ॥९॥

सदाम्लेच्छसंसर्गतोतीव गर्वं लभेन्मानिनी कामिनीभोगमुच्चैः ॥जनैर्व्याकुलोसौसुखंनाधिशेते मदार्थव्ययी क्रूरकर्मा खगेगौ ॥१०॥

भा०टी०-जिस मनुष्य के जन्म लग्न से दसवें स्थान में राहु हों वह पागलपन से धन खर्च करे, बुरे कामों के करने के कारण लोगों से घृणित रहे अतएव नींद भर न सोवे चाण्डालों की संगति करे और सुन्दर रुपवती युवती स्त्री से सुख पावे ॥१०॥

सदा म्लेच्छतोऽर्थंलभेत्साभिमानश्चरेत्किंकरैश्च व्रजेत्किंविदेशम् ॥ परार्थाननर्थीहरेद्धूर्त्तबंधुः सुतोत्पत्तिसौख्यं तमो लाभगश्चेत् ॥११॥

भा० टी०-जिस मनुष्यके जन्म लग्नसे इगारहवें स्थान में राहु हों उसे लड़का पैदा होने का सुख प्रायः हुआ करे (म्लेच्छ) चाण्डालों से धन प्राप्त करे, अहंकारी होवे, विना सेवक (नौकर) के कहीं न जाय, घर बैठे ही सब सुख पावे, इसके भाई तथा मित्र धूर्त होवें धूर्तता से दूसरा की चीजें ले लिया करें वा डर से लोग इन्हे खुद दे दिया करें ॥ ११ ॥

तमोद्वादशे दीनतां पार्श्वशूलं प्रयत्नेकृते अनर्थतामातनोति खलैर्मित्रतां साधुलोके रिपुत्वं विरोममनोवाञ्छितार्थस्यसिद्धिम् ॥१२॥

भा०टी०-जिस मनुष्य के जन्म लग्न से बारहवें स्थान में राहु हों वह दरिद्र हो, बगल में बात की पड़ा होवे, बुरे लोगों से प्रेम और अच्छे लोगों से शत्रुता रखे, कोई कार्य्य यत्न पूर्वक करने से भी हानि ही हो जावे पर तौ भी अन्त में सिद्धि पावे ॥१२॥

इति राहुभावफलानि ।



अथ केतुभावफलानि ।

तनुस्थः शिखी बांधवक्लेशकर्त्ता तथा दुर्जनेभ्यो भयंव्याकुलत्वम् ॥ कलत्रादिचिंता सदोद्वेगता चशरीरेव्यथानेकधा मारुतीस्यात् ॥१॥

भा०टी०-जिस मनुष्य के जन्म लग्न में केतु हों तो भाइयों को कष्ट हो,दुर्जन (बुरे लोगों) से भय होवे, व्याकुलता (घबड़ाहट) बनी रहे,पुत्र कलत्र इत्यादि चिन्तित रहे अतएव मन में उद्वेग हो चित्त स्थिर न रहे और शरीर में वायु की पीड़ा अनेक प्रकार की सर्वदा बनी ही रहे ॥१॥

धने केतुरव्यग्रता किंनरेशाद्धनेधान्यनाशो मुखेरोगकृच्च ॥ कुटुंबाद्विरोधोवचः सत्कृतंवा भवेत्स्वगृहे सौम्यगेहेतिसौख्यम् ॥२॥

भा० टी०--जिस मनुष्य के जन्म लग्न से दूसरें स्थानमें केतु हों उसे धन के लिये राजाओ से धोखा हो, अन्न की चिन्ता रहे अर्थात् जहां से मिलने की आशा हो वहीं हानि हो जाय, मुख में कुछ रोग होवे, अपने कुटुम्बों से बिरोध होवे, मीठी बात कभी न बोले, और यदि केतु अपनी राशि

मेष,मिथुन वा कन्याके हो तो उपरोक्त (ऊपर लिखे)सब फलों को शुभ ही जानो अशुभ (हानि कारक) कदापि न होवें॥२॥

शिखी विक्रमे शत्रुनाशं विवादं धनं भोगमैश्वर्यतेजोऽधिकं च ॥ सुहृद्वर्गनाशं सदा बाहुपीडा भयोद्वेगचिंताकुलत्वं विधत्ते॥३॥

भा०टी०--जिस मनुष्य के जन्म लग्न से तीसरे स्थानमें केतु हों उसके शत्रुओं का नाश हो, विवाद (कलह) होता रहे, धन ऐश्वर्य्य तथा तेज अधिक होवे, सुहृद (प्रिय जनों) का नाश हो, हमेशा बाहु में पीड़ा रहे और डर (भय) उद्वेग (घबराहट) और चिन्ता (फ़िक्र) नित्य ही होवें ॥३॥

चतुर्थे न मातुः सुखं ना कदाचित्सुहृद्वर्गतः पैतृकं नाशमेति ॥ शिखीबंधुवर्गात्सुखं स्वोच्चगेहे चिरंनो वसेत्स्वेगृहेऽव्यग्रताचेत् ॥४॥

भा० टी०-जिस मनुष्य के जन्म लग्न से चौथे स्थान में केतु हों तो माता का सुख न मिले और मित्रों से भी सुख न होवे, पिता के कमाये धन नाश होजायें अतएव व्यग्रतासे

यह मनुष्य बहुत दिन घरमें न रहे परदेश हीमें रहा करे और यदि केतु उच्च राशि अर्थात् मीन का हो तो बन्धुवर्गों से सुख मिले ॥४॥

यदा पंचमे राहुपुच्छं प्रयाति तदा सोदरे घातवातादि कष्टम् ॥ स्वबुद्धिव्यथासंततः स्वल्पपुत्रः सदासो भवेद्वीर्ययुक्तोनरोपि ॥५॥

भा० टी०–जिस मनुष्य के जन्म लग्न से पांचवें स्थान में केतु हों तो उसे भाइयों का घात होवे, वायु आदि रोगसे कष्ट होवे, अपनी बुद्धिकी गलतीसे शरीर में कष्ट हो, सन्तान थोड़े हों, मनुष्य बलवान हो पर दूसरे का दास (तावेदार) बना रहे ॥५॥

तमः षष्ठभागे गते षष्ठभावे भवेन्मातुलान्मानभंगोरिपूणाम् ॥ विनाशश्चतुष्पात्सुखं तुच्छचित्तं शरीरे सदानामयं व्याधिनाशः ॥६॥

भा० टी०–जिस मनुष्य के जन्म लग्न से छठें स्थान में केतु हों तो उसके मामासे मानहानि हो, शत्रुओं का नाश होवे, गौ आदि पशुओं से सुख हो सदा मन मलीन रहे और इस पुरुष का शरीर खूब निरोग रहे ॥६॥

शिखी सप्तमे भूयसी मार्गचिंता निवृत्तः स्वनाशोऽथवा वारिभीतिः ॥ भवेत्कीटगः सर्वदा लाभकारी कलत्रादिपीडा व्ययो व्यग्रता चेत् ॥७॥

भा॰ टी॰--जिस मनुष्यके जन्म लग्न से सातवें स्थान में केतु हों उसे मार्ग चिन्ता (सफर करने की चिन्ता) अधिक लगी रहे, जो एकत्रित धन हो उसका नाश होवे, पानी में डूबने का भय हो, पुत्र कलत्र आदि की पीड़ा हो, धन अधिक खर्च होवे, और मन में क्रोध भरा रहे यदि केतु वृश्चिक राशि का हो तो सब सुख ही होता है ॥७॥

गुदं पीडयतेऽर्शादिरोगैरवश्यं भयं वाहनादेः स्वद्रव्यस्य रोधः ॥ भवेदष्टमे राहुपुच्छेऽर्थलाभः सदा कीटकन्याजगो युग्मकेतुः ॥८॥

भा॰ टी॰--जिस मनुष्य के जन्म लग्न से आठवें स्थान में केतु हो उसे भगन्दर, बवासीर आदि की बिमारियां हों सवारी से गिरने का भय होवे, अपना धन अपने काम म न खर्च होवे, और यदि केतु, वृश्चिक, कन्या, मेष और मिथुन इन राशियोंसे किसीमें होंतो हमेशा लाभ होतारहे ॥८॥

शिखी धर्मभावे यदा क्लेशनाशः सुतार्थी भवेन्म्लेच्छतो भाग्यवृद्धिः ॥ सहोत्थव्यथां बाहुरोगं विधत्ते तपोदानतो हास्यवृद्धिं तदानीम् ॥९॥

भा०टी०-जिस मनुष्य के जन्म लग्नसे नवें स्थान में केतु हों तो उसके भाइयो को पीड़ा होवे, अपने बाहुमें भी बीमारी होवे, दान पुण्य आदि कर्मों में हंसी होवे,नीच जातिके लोगों से धन बढ़े और कष्ट नाश को प्राप्त होवे, पुत्र की इच्छा अधिक रहे ९

पितुर्नो सुखं कर्मगो यस्य केतुस्तदा दुर्भगं कष्टभाजं करोति ॥ तदा वाहने पीडितं जातु जन्मवृषाजालिकन्यासुचेच्छत्रुनाशम् ॥१०॥

भा० टी०-जिस मनुष्य के जन्म लग्न से दसवें स्थान में केतु हों उसे पिता का सुख नहीं होता और मनुष्य दुर्भग (कमबख्त) और दुःख भोगने वाला होता है तथा सवारी के निमित्त दुखित रहता है और यदि मेष १ वृष २ वृश्चिक ८ कन्या ६ राशि का होतो शत्रुओं का संहार (नाश) करे॥१०॥

सुभाग्यःसुविद्याधिकौ दर्शनीयः सुगात्रःसुवस्त्रः सुतेजोपि तस्य ॥ दरे पीडयतं संततिर्दुर्भगाच शिखी लाभगः सर्वलाभं करोति ॥११॥

भा०टी०-जिस मनुष्यके जन्म लग्नसे इगारहवें स्थान में केतु हों वह सुन्दर भाग्यवान, विद्यावान, दर्शनीय, सुन्दर शरीरवाला, अच्छा वस्त्र पहिरनेवाला और तेजवान होता है पर सन्तति (पुत्रादिक) भाग्यहीन होती है, भय से पीड़ित रहता है ॥११॥

शिखी रिःफगो बस्तिगुह्यांघ्रिनेत्रे रुजापीडनं मातुलान्नैवशर्म ॥ सदा राजतुल्यंनरंसद्व्ययं तद्रिपूणां विनाशंरणेऽसौ करोति ॥१२॥

भा०टी०- जिस मनुष्यके जन्म लग्न में बारहवें स्थान में केतु हों तो वह मनुष्य राजाओं के समान सुख भोगने वाला होता है और अच्छे कामों में धन खर्च करता है। इस मनुष्य के वस्ति अर्थात् नाभी के नीचे, गृह्य अर्थात् लिंग, अंघ्री अर्थात् पैर और नेत्र अर्थात् आंखों में रोग होवें और मामा के पक्ष खानदान में सुख न होवे ॥१२॥

गया जिलान्तर्गत देव राजधानी समीवर्ती कुरका ग्राम निवासी। पं० शिवपदार्थ मिश्रात्मज प० धनुष धारी मिश्र कृत चमत्कारचिन्तामणि का भाषानुवाद समाप्त।

पुस्तक मिलने का ठिकाना:—
बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर,
राजा दरवाजा-बनारस सिटी।

10. DOCUMENTS ENCLOSED :

Invoice No..dt..

Packing List..Copies.

Buyer's Order No...attached

or Photo copy of L/C

GRI Form No..Triplicate

Declarations Forms

....

....

....

SHIPPING Marks & Nos. | Shipper's Signature.......................

Name & Address of Shipper

No shipments will be accepted if packages are not stencilled with shipping

Port of Discharge.



HER SHIPPING & TRAVEL AGENTS

